सिर्फ एक मुर्गी

एक छोटा सा क़र्ज़, बड़ा बदलाव ला सकता है!

एक छोटा सा क़र्ज़, बड़ा बदलाव ला सकता है!

सिर्फ एक मुर्गी

यह कहानी दुनिया में बदलाव के बारे में है. एक व्यक्ति, एक परिवार और एक समुदाय में कैसे बदलाव आया, उसके बारे में है.

कोजो, पश्चिम अफ्रीका में, घाना के एक छोटे से शहर में रहता था. वो और उसकी माँ इकट्ठे मिलकर जलाऊ लकड़ी बेचकर गुजारा करते थे. उससे उन्हें बहुत पैसा या भोजन नहीं मिलता था - बस उनका पेट भर जाता था. फिर जब कोजो को एक छोटा सा क़र्ज़ मिला, तो उसके दिमाग में एक नया विचार आया. वो उस क़र्ज़ से एक मुर्गी खरीदेगा जिससे उनके पास खाने के लिए अंडे होंगे. जल्द ही उसके पास बाजार में बेचने के लायक अंडे हो गए. उस मुनाफे से कोजो ने और अधिक मुर्गियाँ खरीदीं और उससे अपने स्कूल की फीस चुकाई. स्कूल खत्म करने के बाद, उसे एक बड़ा क़र्ज़ मिला. उससे उसने धीरे-धीरे एक पोल्ट्री फार्म शुरू किया, जहाँ उसने मज़दूरों को काम पर रखा और सरकार को खूब टैक्स का भुगतान किया. उन पैसों से उसके समुदाय में सुधार आया. कोजो ने दूसरों को भी पैसे उधार दिए ताकि वे भी गरीबी से उबर सकें.

यह कोजो है.

कोजो ने जलाऊ लकड़ी के एक बंडल में रस्सी से गाँठ बाँधी और उसे अपने सिर पर रखा. पिता की मृत्यु के बाद से उसे स्कूल छोड़ना पड़ा. उसने लकड़ी इकट्ठा करने में और उसे बाजार में बेचने में अपनी माँ की मदद की. यह दिन का आखिरी बोझ था और वो बहुत थका और भूखा था.

कोजो और उसकी मां मिट्टी की दीवारों वाले घर में रहते थे और खुली आग पर अपना खाना पकाते थे. उनका एक बगीचा भी था जहाँ वे अपना भोजन स्वयं उगाते थे. उनके पास कभी भी ज़्यादा पैसा नहीं था. वे मुश्किल से अपना पेट भर पाते थे.

जैसे ही कोज़ो घर के पास पहुँचा वो अपनी माँ द्वारा पकाए "फूफू" खाने (कंद से बने भोजन) को सूंघ पाया. फिर उसने तेजी से चलना शुरू किया.

यह वो क़र्ज़ है जो
कोज़ो को मिला.

कोजो और उसकी मां घाना के अशांति क्षेत्र, के एक गाँव में रहते हैं. गाँव में बीस परिवार हैं और उनमें से सभी गरीब है. लेकिन उनके पास एक अच्छा विचार है. प्रत्येक परिवार थोड़े पैसे बचाता है जिससे कि उनमें से कोई एक परिवार उस पैसे को उधार लेकर कोई ज़रूर चीज खरीद सके.

एचेमपोंग परिवार ने सबसे पहले पैसे उधार लिए. उन पैसों से उन्होंने फलों के दो बड़ी पेटियां खरीदीं. उन्हें बाजार में बेंचकर उन्होंने कुछ मुनाफा कमाया. जब उन्होंने अपना क़र्ज़ वापस किया तो डुओडु परिवार ने उस क़र्ज़ से अपने लिए सेकंड-हैंड हाथ की सिलाई मशीन खरीदी. वे कपड़े सिलने का काम शुरू करना चाहते थे, जिससे वे रेडीमेड शर्ट और पैंट बेंच सकें.

फिर एक दिन कोजो की माँ की बारी आई. उन्होंने एक ठेला-गाड़ी खरीदने के लिए ऋण का उपयोग किया ताकि वो बाजार में अधिक जलाऊ लकड़ी ले जा सके. उन्होंने अपनी ठेला-गाड़ी को किराए पर देने के बारे में भी सोचा.

माँ के क़र्ज़ में से कुछ सिक्के बचे. कोज़ो ने उन सिक्कों से अपने लिए कुछ खरीदने की बात सोची. वो भी एक अच्छा विचार था.

कोजो ने एक मुर्गी खरीदने की बात सोची. फिर वो और उसकी माँ अंडे खा सकते थे और बचे अंडों को बाजार में बेच सकते थे. पड़ोसी गांव में एक किसान था जिसके पास कई मुर्गियाँ थीं, जिनमें से एक मुर्गी को कोजो खरीदने के लिए गया.

मुर्गी फार्म तक पहुँचने में कोजो को दो घंटे लगे. जब तक वो वहां पहुँचा है वो गर्म धूल से पूरी लथपथ हो चुका था. उन अनगिनत मुर्गियों में से वो एक सही मुर्गी को कैसे चुने?

कोजो ने सभी मुर्गियों को बड़े ध्यान से देखा. एक सफेद मुर्गी उसके पैर के पास दाना चुग रही थी. क्या उसे वो मुर्गी चुननी चाहिए? एक धब्बेदार मुर्गी अपने पंखों को फड़फड़ाकर आवाज़ कर रही थी. क्या वो ठीक रहेगी? फिर कोज़ो को एक चमकदार भूरे रंग की मुर्गी अपने घोंसले में पंखों को फुलाए बैठी दिखी. क्या उस मुर्गी को अंडे देने में मजा आएगा? फिर उसने और ज़्यादा नहीं सोचा. वह अपने दिल में लगा कि वही सही मुर्गी होगी.

कोजो ने उस भूरी मुर्गी का भुगतान किया और फिर उसे एक बांस की टोकरी में डाला. उसने धीरे से मुर्गी को एक कपड़े से ढंका और फिर टोकरी को अपने सिर पर उठाया. जैसे कोजो अपने घर की तरफ चला वो अपने भविष्य के बारे में सपने देखने लगा. क्या उसके पास खाने के लिए और बेंचने के लिए बहुत सारे अंडे होंगे? अगर वो भाग्यशाली हुआ तो उन अंडों को बेंचकर वो और अधिक मुर्गियां खरीद पाएगा.

उस रात मुर्गी वाली टोकरी को उसने अपने बिस्तर की चटाई के पास रखा जिससे वो सुरक्षित रहे.

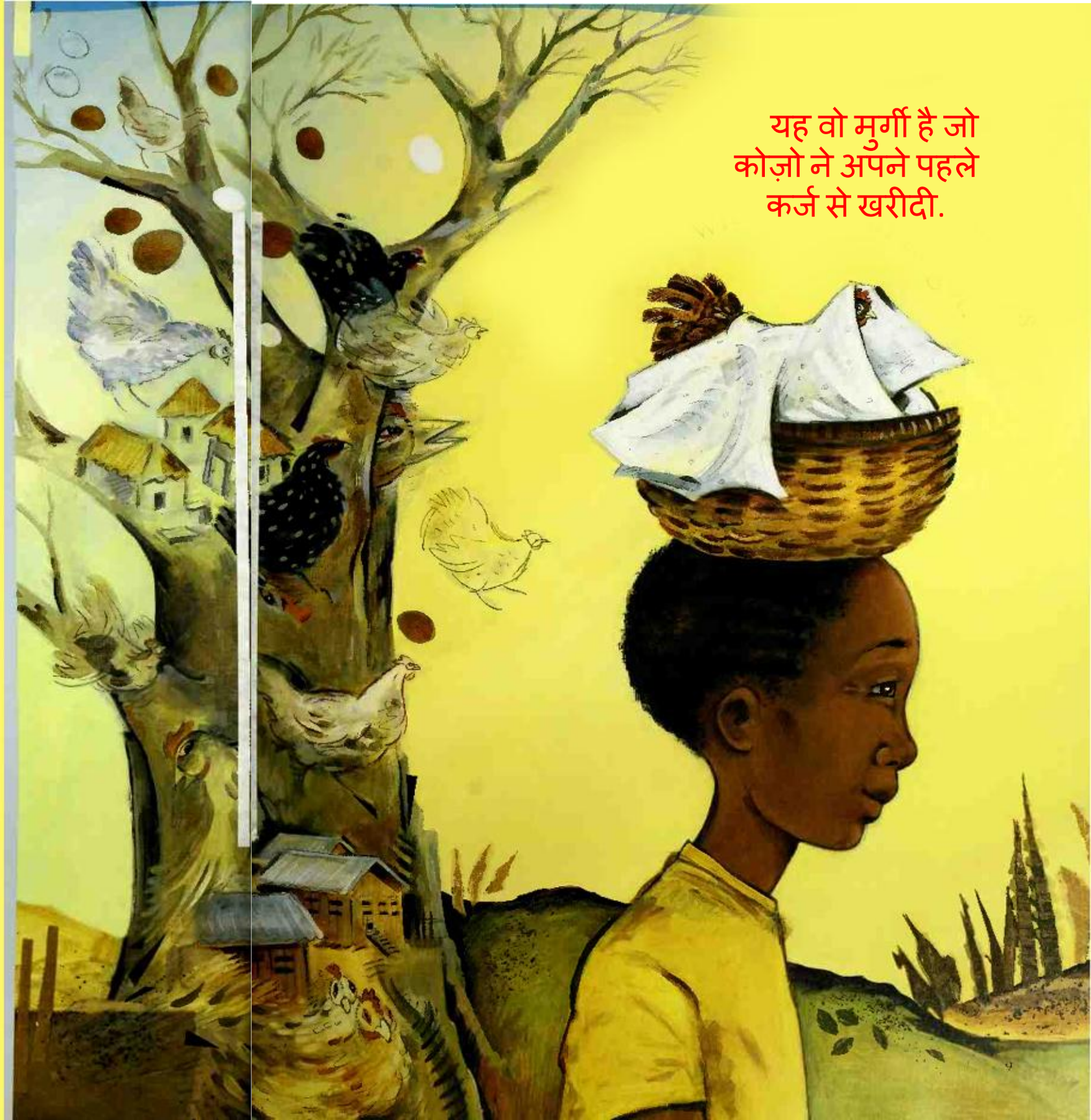

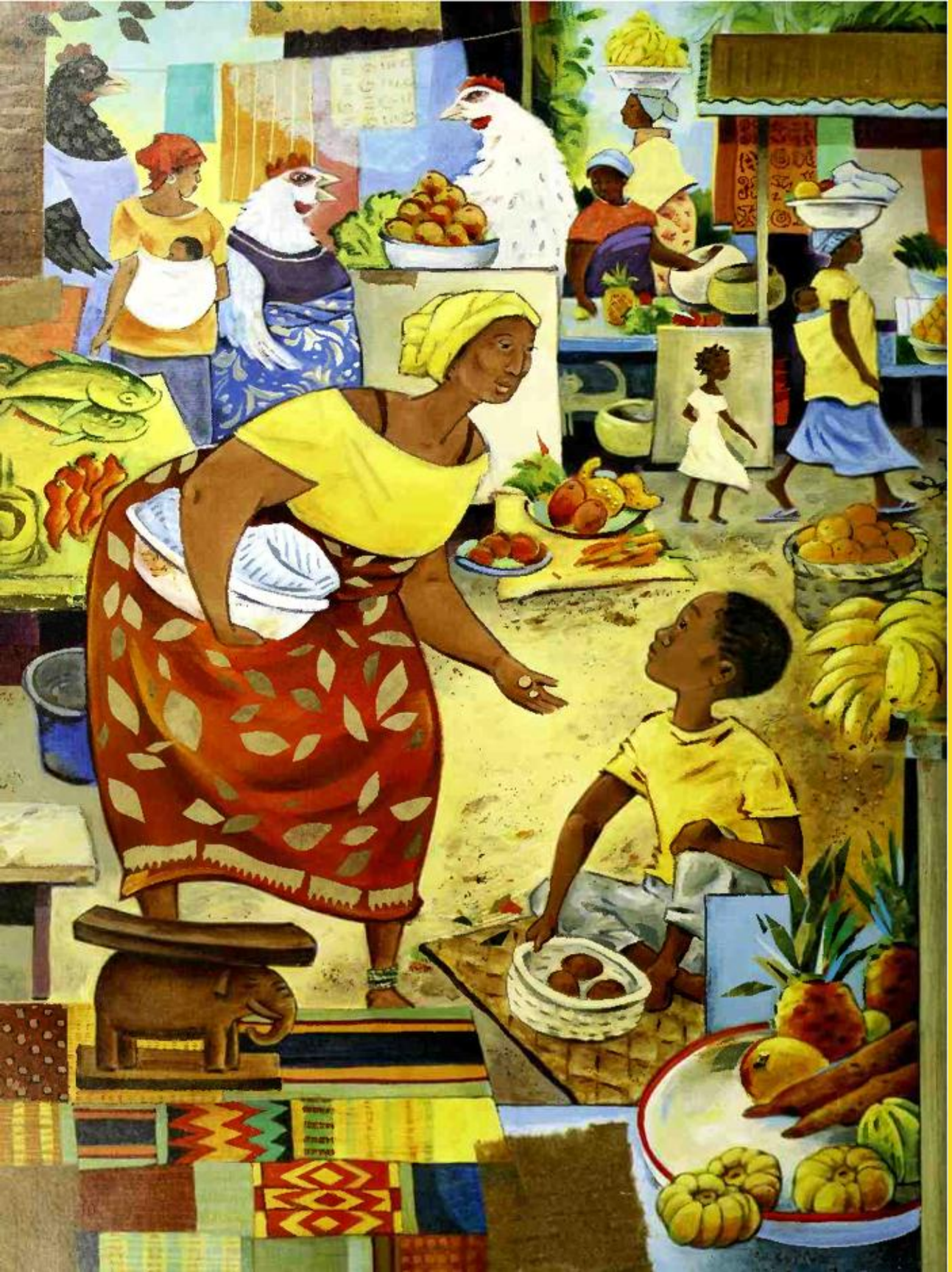

कोजो ने एक पुराने वाशिंग-पाउडर के डिब्बे से अपनी मुर्गी के लिए एक घोंसला बनाया. फिर हर दिन उसने उसमें अंडे की जांच की. पहले दिन उसे कुछ भी नहीं मिला. दूसरे पर, अभी भी कुछ नहीं - लेकिन यह क्या है? कोने में, पुआल के नीचे, एक चिकना भूरा अंडा पड़ा था! कोजो भाग्यशाली था, वास्तव में उसकी मुर्गी को अंडे देने में बड़ा मज़ा आता था. पहले सप्ताह में उसने पांच अंडे दिए. कोजो और उसकी माँ ने एक-एक अंडा खाया. शनिवार को बाजार में बेंचने के लिए उसने तीन अंडे बचा कर रखे.

बाजार के दिन वो फल, सब्जियों, मीट, कपड़ों और बर्तनों की दुकानों के बीच में गया. उसने छोटी टोकरी रखने के लिए एक अच्छी जगह ढूंढी. कोजो ने मा. एचेमपोंग को दो अंडे और एक अंडा डुओडु को बेचा. उसने अंडों के पैसों को कसकर मुट्ठी के पकड़ा ताकि वो उन्हें खो न दे. फिर वो अपनी टोकरी को पैक करके घर की ओर चला. रास्ते में उसे एक और खजाना मिला - जमीन पर गिरे हुए अनाज के दाने और फलों के टुकड़े जिन्हें वो अपनी मुर्गी को खिला सकता था.

धीरे-धीरे, कोज़ो की अंडों से कमाई बढ़ती गई. दो महीने के अंदर उसने अपनी मां का क़र्ज़ वापिस कर दिया. चार महीनों में उसने एक और मुर्गी खरीद ली. अब कोज़ो हफ्ते में पांच अंडे बेच सकता था और वो और उसकी माँ अधिक अंडे खा सकते थे. छह महीनों बाद उसने तीसरी मुर्गी खरीदी. अब वो और उसकी माँ रोज़ाना एक-एक अंडा खाते थे. कोजो को अपने अंडों पर गर्व था. और मां को अपने कोजो पर गर्व था. धीरे-धीरे करके एक छोटी मुर्गी एक बड़ा बदलाव ला रही थी.

यह वो अंडे हैं जो कोजो ने
खरीदी हुई मुर्गी से बेंचे.

एक साल बाद कोज़ो के पास पच्चीस मुर्गियों का झुंड हो गया. उसे मुर्गियों के झुंड की आवाज, त्यौहार के समय ढोल पीटने के शोर से बेहत लगती थी. लेकिन इतनी सारी मुर्गियों के अंडे इकट्ठा करना कठिन काफी काम था. कभी मुर्गियां उससे अपने अंडे छिपाने की कोशिश करतीं थीं. आज उसे एक अंडा कंद के पौधे के नीचे पड़ा हुआ मिला. जब उसने घोंसलों की जाँच की, तो सफ़ेद मुर्गी ने उस पर झपट्टा मारा. पर चमकदार लाल कंघी वाली भूरी मुर्गी अभी भी उसकी सबसे पसंदीदा मुर्गी थी. वो हमेशा एक भूरे रंग का चिकना अंडा देती थी.

बाजार में अंडे बेचने से कोजो कुछ बचत कर पाया. उन पैसों से उसने मुर्गियों के लिए लकड़ी का एक अच्छा दबड़ा बनाया. उन पैसों से उसने अपनी माँ के लिए ज़रूरत की कुछ चीज़ें भी खरीदीं, जैसे कि एक नई पानी की बाल्टी और एक अच्छा चाकू. उन पैसों से वो अपने सपने पूरा कर सकता था - उससे वो स्कूल की फीस भर सकता था ताकि वो स्कूल वापस जा सके.

"तुम्हारे अंडों ने हमें मजबूत बनाया है, कोजो," उसकी माँ ने कहा. "अब स्कूल जाओ और सीखो ... हम दोनों के लिए."

इन मुर्गियों को कोजो ने अंडे बेचने से मिले पैसों से खरीदा.

यह वो स्कूल है,
जहाँ कोजो ने फीस भरी -
उन पैसों से, जो उसने अंडे
बेचकर कमाए.

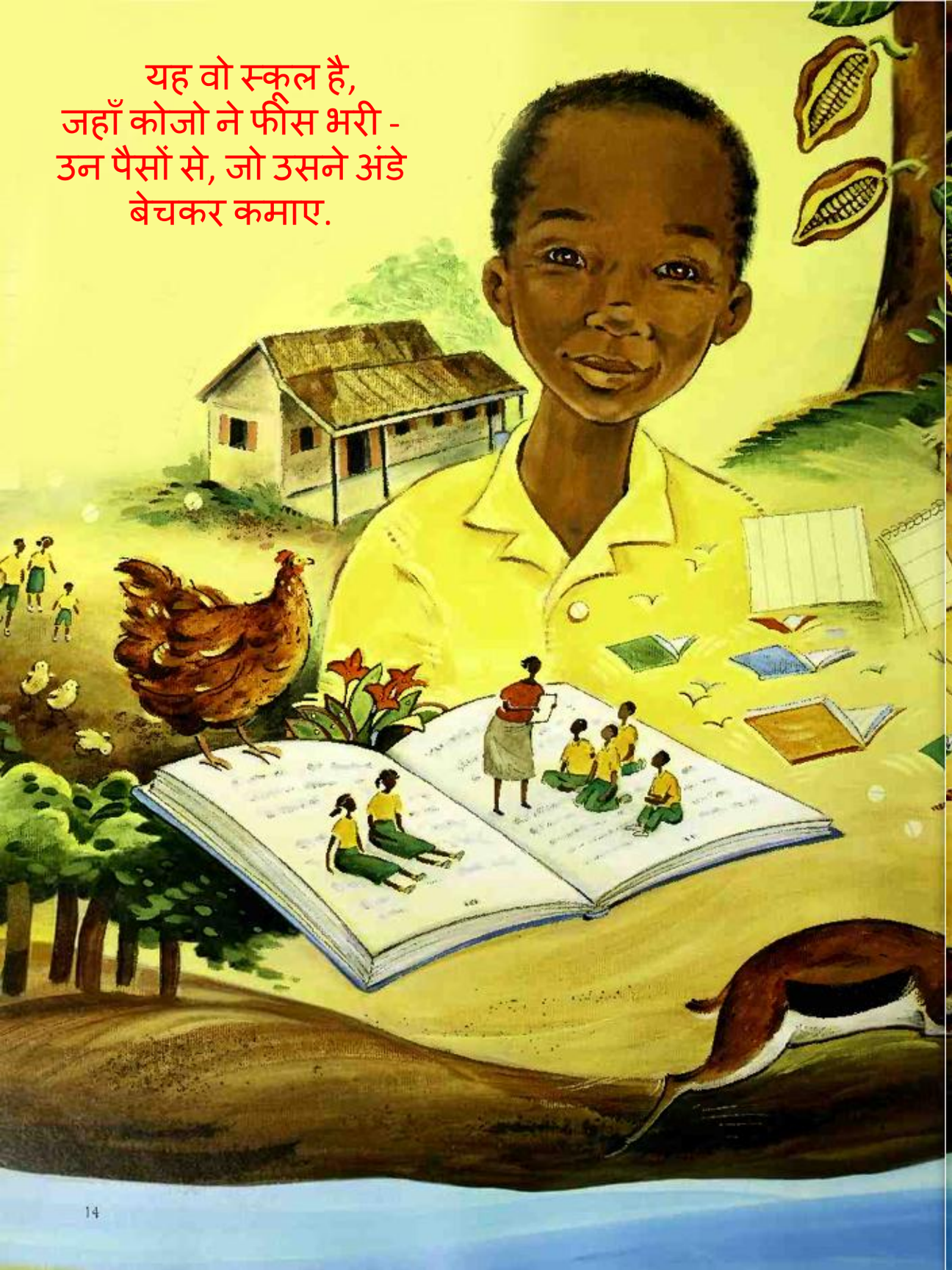

कोजो की स्कूल ड्रेस नई और माढ़ से सख्त थी. वो पैदल स्कूल जा रहा था. हरेक कदम के साथ उसके होंठ चुपचाप हिल रहे थे. वो वर्णमाला के वो अक्षर और संख्याएँ याद करने की कोशिश कर रहा था जो उसने अपने पिता की मृत्यु से पहले सीखे थे.

स्कूल में कोजो ने अन्य बच्चों की तरह पढ़ने में और अंकगणित के सवाल हल करने में कड़ी मेहनत की. बाद में उसने निबंध लिखना सीखा और गणित और विज्ञान की समस्याओं को हल करना भी. उसनेअपने देश के इतिहास उसके संसाधनों और अफ्रीका और दुनिया भर के अन्य देशों के बारे में भी सीखा.

उसने कुछ व्यावहारिक सबक भी सीखे : पीने के पानी को कपड़े कैसे छानें, कैसे फ़िल्टर करें; सब्जियां उगाने के लिए कचरे से बनी खाद का कैसे उपयोग करें. कोजो ने जो कुछ सीखा उससे वो मुर्गियों की बेहतर देखभाल कर पाया.

अब कोजो के सपने बड़े हो रहे थे. लेकिन अपने सपनों को साकार करने के लिए उसे पता था कि उसे शिक्षा की आवश्यकता होगी. कोजो ने और भी कठिन अध्ययन किया और फिर उसने खेती की पढ़ाई के लिए एक कृषि महाविद्यालय में छात्रवृत्ति जीती. जब वो दूर होगा तो माँ उसकी मुर्गियों की देखभाल करेगी.

कॉलेज में कोजो के सपने आकार लेने लगे. अब वो खुद का फार्म शुरू करना चाहता था.

कॉलेज खत्म करने के बाद कोजो ने एक बड़ा जोखिम भरा फैसला लिया. जो पैसे उसने और उसकी माँ ने बचाए थे उनके उपयोग से उसने एक असली मुर्गी फार्म शुरू करने का मन बनाया. उसने जमीन एक प्लाट खरीदा और साथ में दबड़े बनाने के लिए पर्याप्त लकड़ी और तार भी. अब उसे मुर्गी-फार्म शुरू करने के लिए मुर्गियाँ खरीदनी थीं - नौ सौ मुर्गियाँ! उसके लिए उसे के एक बड़ा ऋण चाहिए था.

कोज़ो पास के शहर ल्वामासी के एक बैंक में गया. जब बैंकर ने सुना कि कोज़ो नौ सौ मुर्गियाँ खरीदना चाहता है, तो उसने मना कर दिया. बैंकर एक गरीब परिवार के लड़के को इतना पैसा उधार देना नहीं चाहता था.

पर कोजो ने हार नहीं मानी. वो देश की राजधानी - अकरा में, बैंक के मुख्यालय में गया. कोजो ने बैंक के अध्यक्ष से मिलने का इंतजार किया. बैंक बंद होने के करीब था, आखिरी समय पर अध्यक्ष उससे मिले. उनके पास बहुत समय नहीं था. वो एक बहुत व्यस्त आदमी थे.

कोजो ने बैंक अध्यक्ष से कहा कि उसके पास स्कूली शिक्षा थी और वो कड़ी मेहनत करने को तैयार था. बैंक अध्यक्ष ने इस तरह की कहानियां पहले भी सुनी थीं. फिर कोज़ो उन्हें अपने पहले क़र्ज़ के बारे में बताया जिसके उपयोग से उसने मुर्गियों के एक बड़े झुंड का निर्माण किया था.

बैंक अध्यक्ष वापस अपनी कुर्सी पर बैठ गए. उन्होंने अपनी उंगलियों से कुछ टैप किया. कोजो की कहानी काफी नायाब थी. वो मुस्कुराए और उन्होंने अपना सिर हिलाया - कोजो को ऋण मिल जाएगा. बैंक अध्यक्ष और कोजो ने, आपस में हाथ मिलाया.

घर वापस आकर कोजो ने मुर्गियाँ खरीदीं. जल्द ही उन मुर्गियों के इतने सारे अंडे होंगे कि उन्हें इकट्ठा करने के लिए उसे कुछ सहायकों की आवश्यकता होगी.

यह वो फार्म है जिसे कोजो ने कॉलेज में सीख और बैंक से दिए गए ऋण से खड़ा किया.

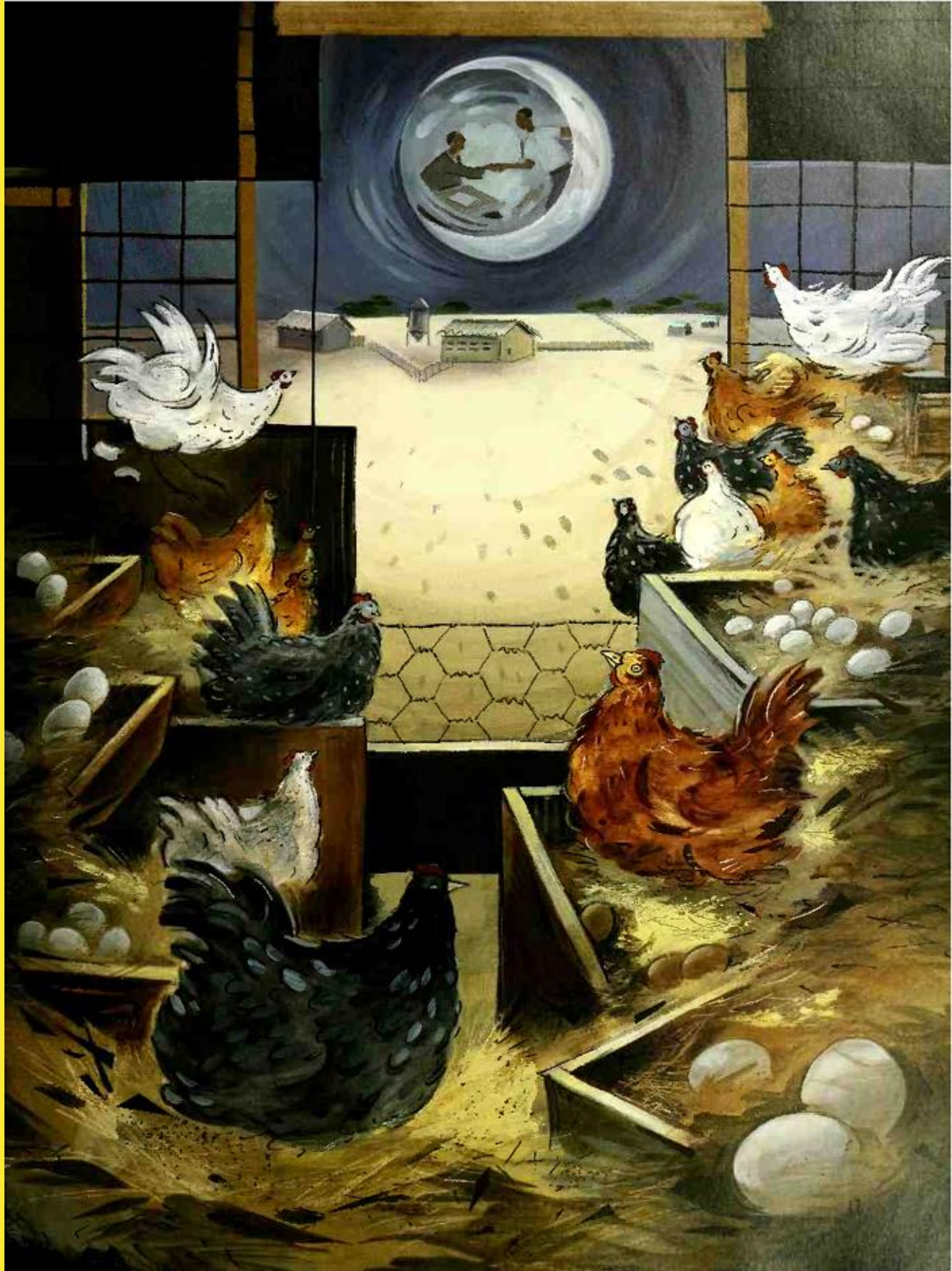

यह कोज़ो का परिवार है
जिसे वो अपने फार्म की
कमाई से पालता-पोसता है.

कोजो के मुर्गियाँ खूब अंडे देती थीं. वे गाँव के लोगों की ज़रूरतों से भी अधिक अंडे देती थीं, इसलिए कोजो, दुकानदारों को अंडे बेचने के लिए कुमासी की यात्रा करता था.

एक दुकानदार का नाम लुमो था. कोजो उसे अच्छी तरह से जानता था. वो आदमी कोज़ो के पिता के ही गाँव में पला-बढ़ा था इसलिए वो उसका अच्छा दोस्त था. कोजो हमेशा लुमो की दुकान पर ही जाता था और कभी-कभी रात के खाने के लिए भी वहां रुकता था. कोजो को अपने पिता के बारे में कहानियाँ सुनना बहुत पसंद थीं. उसे मूंगफली का शोरबा और ताड़ के तेल का सूप भी पसंद था जो लूमो की बेटी बनाती थी.

लूमो की बेटी का नाम लुमुसी था, और वो एक टीचर थी. उसे कोजो जैसे लड़कों के बारे में कई कहानियाँ पता थीं - ऐसे लड़के जो सीखना चाहते थे और जिन्होंने बड़े सपने संजोए थे. कोजो को वो कहानियां बेहद पसंद आती थीं इसलिए वो वहां बार-बार जाता था. वो लुमूसी की कहानियों को हर दिन सुनना चाहता था. एक दिन कोजो ने लुमूसी के सामने शादी का प्रस्ताव रखा.

लुमुसी, कोजो से शादी करने को तुरंत तैयार हो गई. वो फार्म पर कोजो का साथ देने लगी. जल्द ही कोजो और लुमुसी माता-पिता बने. जैसे-जैसे साल बीते उनके तीन लड़के और दो लड़कियां हुईं सभी बलवान और चतुर. कोज़ो के अंडों के पैसे की कमाई से ईंटों का एक पक्का बड़ा घर बनाया. कोजो की माँ उनके साथ रहने लगी. उन्हें बगीचे में काम करना अच्छा लगता था. पर अब उन्हें कभी भी जलाऊ लकड़ी नहीं बेचनी पड़ेगी.

जल्द ही कई लोग कोजो के खेत पर काम करने लगे. आदमी लोग, मुर्गियों को दाना खिलाते और दबड़ों को साफ करते थे. महिलाएं अंडे इकट्ठा करती और उन्हें बक्सों में पैक करती थीं. कुछ लोग अंडों को कुमासी और अकरा के बाजारों में बेंचने के लिए जाते थे.

मजदूरों के भी परिवार थे. कुल मिलाकर कोजो के खेत से एक सौ बीस लोग मजदूरी करते थे. ओडोंकोर जैसे परिवारों के पास खाने के लिए और अपने बच्चों के स्कूल की फीस के लिए पर्याप्त पैसे थे. जब उनकी बेटी अडिका बीमार पड़ती तो ओडोंकोर उसके लिए दवाइयां खरीद सकते थे. ओडोंकोर अपने मिट्टी के घर की दीवारों को दुबारा फिर से बना सकते थे और विशेष अवसरों के लिए विशेष छपे कपड़े खरीद सकते थे.

कोज़ो के खेत में काम करने वाले मज़दूर अपने खुद के मवेशी खरीद सकते थे. कुछ परिवार बकरी, और कुछ एक भेड़ खरीदते थे. कुछ एक मुर्गी से शुरू करते थे.

कोजो के फार्म पर
काम करने वाले लोग.

शहर है की तरक्की होती है
जब कोज़ो अपने अंडे बेचता है
और मज़दूरों को पैसे देता है.

कोजो का खेत अब घाना में सबसे बड़ा था. धीरे-धीरे उसका शहर भी बड़ा हुआ. कुछ लोग फार्म पर नौकरी खोजने आते और फिर वहीँ पर अपने परिवारों के लिए घर बनाते थे. अन्य लोग शहर में दुकाने खोलते और मज़दूरों को रोज़ाना इस्तेमाल होने वाला सामान बेचते थे.

एक दिन, जब कोज़ो हिसाब-किताब कर रहा था, तो दरवाजे पर एक दस्तक हुई. आदिका ओडोंकोर, जो अब बड़ी हो गई थीं ने कोजो का अभिवादन किया और फिर उसे सिक्कों की एक छोटी थैली दिखाई.

उसने कोजो को बताया कि वो पैसे उसने अपनी मजदूरी से बचाए थे. उसने कहा कि अगर उसके पास कुछ और पैसे होते तो वो एक बिजली से चलने वाली अनाज चक्की खरीद सकती थी और अपना एक छोटा सा व्यवसाय शुरू कर सकती थी. वो लोगों के अनाज को, आटे में पीस सकती थी. क्या कोजो उसे एक छोटा क़र्ज़ देगा?

कोजो, अदिका के परिवार को अच्छी तरह से जानता था - उन्होंने कई वर्षों तक साथ-साथ फार्म पर काम किया था. कोजो को यह आइडिया पसंद आया. लेकिन उसने अदिका से एक वादा करवाया कि एक दिन वो भी किसी दूसरे परिवार को इसी तरह से पैसे उधार देगी.

आदिका उसके लिए राज़ी हो गई. जैसे-जैसे लोगों ने दूसरों की मदद की, वैसे-वैसे गांव में कई परिवारों के जीवन में सुधार हुआ, और उनके बच्चों का जीवन स्तर बेहतर हुआ. बच्चों को भरपेट खाने के लिए मिला, ज़्यादा बच्चे स्कूल जाने लगे और अधिक बच्चे स्वस्थ रहने लगे.

जैसे-जैसे साल बीते कोजो का पोल्ट्री फार्म पूरे पश्चिम-अफ्रीका में सबसे बड़ा हो गया. कोजो भी अब बड़ा हो गया था और उसके कई नाती-पोते थे. उसके नाती-पोते अक्सर फार्म पर आते थे और अंडे इकट्ठे करने में मदद करते थे. "यह कहां जाएगा?" वे पूछते थे. "और वो कहाँ?"

"वो बामाको जाएगा," कोज़ो जवाब देता था, "यह बुर्किना फ़ासो जाएगा." कोज़ो के मज़दूर दिन में हजारों अंडे पैक करते थे, और कोज़ो को हर बार गर्व होता था जब वो अंडो के ट्रक को, पड़ोसी देशों में, लोगों के लिए भोजन ले जाते हुए देखता था.

कोज़ो, घाना सरकार को बड़ी मात्रा में टैक्स देता था. उसके यहाँ काम करने वाले मज़दूर और अंडे बेचने वाले दुकानदार भी टैक्स देते थे. उस टैक्स से सरकार, देश भर में सड़कें, स्कूल और स्वास्थ्य क्लीनिकों का निर्माण करती थी. उस पैसे से अकरा के बंदरगाह को बेहतर बनाया जाएगा. उस बंदरगाह पर कई देशों के जहाज व्यापार के लिए आते थे.

अंडों से भरा एक और ट्रक कहीं दूर जा रहा था. तब कोजो ने अपने सबसे छोटे पोते को देखा. अगली बार जब वो लड़का कोज़ो से पूछेगा कि अंडों से भरा वो ट्रक कहाँ जाएगा, तो कोज़ो कहेगा, "वो ट्रक तुम्हारे भविष्य के लिए है, मेरे बच्चे."

यह वो देश है जिसने कोज़ो और आदिक जैसे लोगों के व्यवसायों को बढ़ावा दिया.

उन सभी ने एक भूरी मुर्गी को
खरीदने के लिए एक छोटे
क़र्ज़ से शुरुआत की थी!

कोजो नाम के एक युवा लड़के ने एक भूरी मुर्गी को खरीदने के लिए एक छोटा क़र्ज़ लिया और फिर उससे अपने परिवार, अपने समुदाय, अपने शहर और अपने देश के जीवन को बदल दिया.

यह सब एक अच्छे विचार और एक छोटे से क़र्ज़ से ही संभव हुआ. और यह पूरा सिलसिला एक मुर्गी के साथ शुरू हुआ.

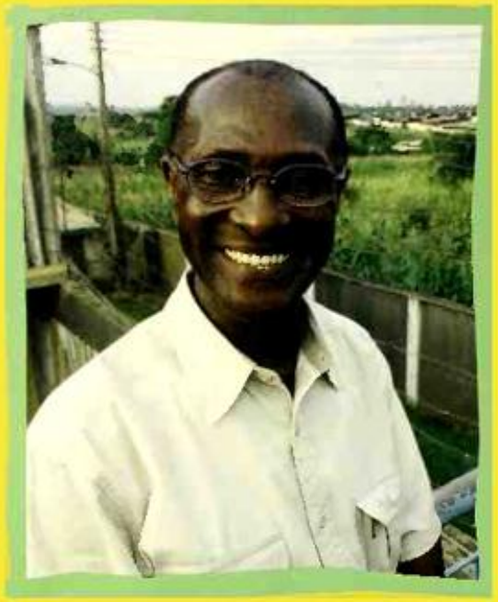

असली कोजो

यह कहानी है घाना के आशांति क्षेत्र के होनहार क्वाबेना डार्को की, जिन्होंने वास्तव में अपने पिता को बचपन में ही खो दिया था और अपनी माँ की परिवार चलाने में मदद की थी.

क्वाबेना का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था. वे मध्य घाना में कुमासी से दूर एक छोटे से शहर में रहते थे. उसने बहुत कम उम्र में ही अपने पिता को खो दिया था. तब उन्होंने चीज़ें खरीदना-बेंचना शुरू कर दी थीं. उससे उन्होंने अपने स्कूल की फीस जमा की और अपने परिवार की मदद की थी. कभी-कभी क्वाबेना के परिवार को तक नहीं पता होता था कि उनका अगला भोजन कहाँ से आएगा.

जब क्वाबेना की माँ ने एक मुर्गी फार्म के मालिक से शादी की, तब क्वाबेना ने मुर्गियों की देखभाल के बारे में सीखा. उसने इज़राइल के एक कॉलेज में पोल्ट्री विज्ञान का अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति जीती. फिर वो अपना कृषि कौशल सुधारने के लिए घाना लौटा. 1967 में, उन्होंने अपने जीवन की पूरी बचत, 1000 डॉलर को, ज़मीन और मुर्गियों में निवेश किया. कोज़ो की तरह, उन्हें भी एक क़र्ज़ की ज़रुरत थी, और उन्हें भी क़र्ज़ लेने के लिए बैंक के साथ बहुत संघर्ष करना पड़ा.

धीरे-धीरे क्वाबेना का कारोबार फलने-फूलने लगा. अपने व्यवसाय में सफल होने के बाद उन्होंने बहुत से अन्य उद्यमियों को ऋण उपलब्ध करवाया. वो जानते थे कि बैंक ऐसे लोगों को क़र्ज़ देने से कतराते थे. इसलिए उन्होंने "मस्टर्ड सीड ट्रस्ट" की शुरुआत की. वो सिर्फ छोटे क़र्ज़ देते थे - लगभग 200 डॉलर के. लेकिन वो छोटे क़र्ज़ एक बड़ा बदलाव लाते थे.

"सिर्फ एक मुर्गी"
एक बेहद प्रेरक कहानी है कि कैसे एक छोटे से क़र्ज़ का बहुत बड़ा प्रभाव हो सकता है. यह एक महज़ कहानी से कहीं ज़्यादा है. कोजो की कहानी एक असली व्यक्ति पर आधारित है. क्वाबेना डार्को, जिन्होंने वास्तव में अपने समुदाय को बदला और अब माइक्रो-क्रेडिट कार्यक्रम के जरिए दूसरों की ज़िंदगी भी बदल रहे हैं.